भीम जीवनी का बचपन

नाम- रवि रंजन कुमार
वर्ग- IX-B
पता- बाढ़, बाजिदपुर

बालक भीमराव का जन्म 14,अप्रैल,1891 को इन्दौर नगर के निकट महू छावनी(म0 प्रदेश) में हुआ था। उनके माता का नाम भीमाबाई और पिता रामजी बाबा था। इन्हीं के घर में उनका जन्म हुआ था। महाराष्ट की प्रथा के अनुसार माता-पिता के नाम के आधार पर उनका नाम भीमराव रामजी रखा गया। उनके पूर्वज महाराष्ट क अम्बावडे गॉव के रहने वाले थे। इसलिए उनका नाम बाद में अम्बेडकर पड़ गया। बचपन में उन्हें भीवा कह कर पुकारा जाता था। अम्बेडकर के पिता रामजी राव पढ़-लिख कर बड़ा आदमी बनना चाहते थे, किन्तु छुआछूत के कारण मजबूर होकर वे भी फौज में भर्ती हो गए। जैसे-तैसे भीमराव का विद्यालय में प्रवेश हुआ। उस समय छुआछूत और जात-पात का बहुत बोल-बाला था। काफी भाग-दौड़ करके कई अधिकारियों से संपर्क साधकर भीमराव को पाठशाला में प्रवेश तो दिला दिया। किन्तु उनके साथ स्कूल में होने वाले भेद-भाव को वे न रोक सके, जिस कक्षा में वे पढ़ते थे, उन्हें उस कमरे में बैठने की अनुमति नहीं थी। उन्हें स्कूल के द्वार से बाहर, जहॉ सभी विद्यार्थी के जूता-चप्पल रखे जाते थें। उसी स्थान पर बैठकर उन्हें अपनी पढ़ाई करना पड़ता था। कक्षा के बाहर बैठे रहने के कारण उन्हें अघ्यापक की बातें भी स्पष्ट रूप से सुनाई नहीं देती थी और नहीं ब्लैक-बोड पर लिखे अक्षर ही साफ दिखाई देता था। इस कठोरता के बावजूद भी भीमाव सबसे अधिक पतिभावान छात्र बनकर उभरे। ऐसा विपरीत वातावरण और व्यवहार झेल कर भी वे संसार के महानतम् विद्वान बनने में सफल हुए। अपने घर के अन्दर रहने की तकलीफों को देखते हुए रात में जाग कर लैंप में अघ्ययन जारी रखना पड़ा। इतने कष्ट और अभावों से संघर्ष करने वाला यह बालक संसार का सबसे बड़ा विद्वान और भारत के भारत रत्न सपूत कहलाये। दलित अछूतों के लिए मान-सम्मान, संवैधानिक अधिकार दिलाने के लिए व्यापक स्तर पर आन्दोलन शुरू किये थे। उनका विवाह मैटीक पास करते हीं 17 वर्ष की उम्र में रमाबाई नामक लड़की से कर दी गई थी। शादी के बावजूद भी अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए, दलितों की मान-सम्मान दिलाने के लिए छुआछूत को जड़ से मिटाने के लिए अपनी पढ़ाई विदेशों में जाकर पूरी किए और 500 ग्रेज्यूएट के बराबर भीमराव अम्बेडकर मात्र एक व्यक्ति थे। इतनी क्षमतावान थे। हमें भी इनकी जीवनी से सीख लेकर के अपने लक्ष्य से कभी भटकना नहीं चाहिए।

डॉ0 भीमराव अम्बेडकर

नाम- खुशबू कुमारी
वर्ग-VIII रौल नं0-9
ग्राम-काब,थाना रानी तलाब(कनपा)
प्रखंड-दुल्हिन बाजार,जिला-पटना

हमारे देश में अनेक महापुरूषों ने जन्म लिये हैं। उन्हीं में से एक डॉ0 भीमराव अम्बेडकर थे। इनका इन्म 14,अप्रैल सन् 1891 ई0 को महाराष्ट के एक अछूत समुदाय की महार जाति में हुआ था। इनक माता का नाम भीमाबाई तथा पिता का नाम रामजी था। भीमाबाई 5 वर्ष तक उस बालक को पालकर स्वर्ग सिधार गयीं। फिर चाची मीराबाई ने उसका पालन-पोषण किया। वे बालक को प्यार से भीवा कहकर बुलाया करती थी। बाद में भीवा भीमराव रामजी अम्बेडकर कहलाये। जिस वर्ष भीमराव का जन्म हुआ, उसी वर्ष रामजी नौकरी से छुट्टी पाकर रत्नागिरी के दपाली स्थान पर आ गये थे। भीमराव को पहली बार एक मराठो स्कूल में भर्त्ती कराया गया। सन् 1905 में रामाबाई नाम की कन्या से भीमराव की शादी हो गयी। उस समय वह नौ वर्ष की थी। शादी के बाद भीमराव अपने पिता के साथ मुंबई चले गये। वहॉ वे एलफिंस्टन स्कूल में भर्ती हुए। इस स्कूल में छुआछूत की कुप्रथा नहीं थी। सन् 1907 में भीमराव ने मैट✦ोक की परीक्षा उत्तीर्ण की। महार जाति के लिए यह बहुत गौरव की बात थी। घर में खूब खुशियॉ बनायी गयी । भोमराव एलफिंस्टन कॉलेज में पढ़ने लगे। बड़ौदा के महाराज सयाजीराव गायक बाड ने प्रसन्न होकर उन्हें 25 रूपये मासिक छात्रवृति देना आरम्भ कर दिया। सन् 1913 मं वे बी0ए0 उत्तीर्ण हो गये। महराज ने उन्हें बड़ौदा बुलाया और दरबार में नौकरी दे दी। दुर्भागय से इसी वषं उनके पिता का स्वर्गवास हो गया। महराज के दरबार में भीमराव को कट्टपंथियों की घृणा का मात्र बनना पड़ा। चपरासी तक उनको फाइलें फेंक कर देते थे। तंग आकर भीमराव ने नौकरी छोड़ दी। उन्होंने डॉक्टरेट की उपाधि पायी। सन् 1916 में वे कालम्बिया से लंदन पहुॅचे। वहॉ एक वर्ष रहकर वे मुंबई लौट आये। विदेश में रहकर डॉ0 अम्बेडकर ने दो पुस्तकें लिखीं। सन् 1920 में उन्होंने छुआछूत की बुराई से लड़ने के लिए 'मूकनायक' नामक साप्ताहिक अखबार निकालना आरंभ किया। जब वे लंदन गये थे, तो तीन वर्ष रहकर उन्होंने अर्थशास्त्र में डो0एस0सी0 की उपाधि प्राप्त की । सन् 1923 में वे मुबई लौट आये और उन्होंने वकालत आरंभ कर दी। सन् 1927 में उन्होंने बहिष्कृत भारत नामक समाचार पत्र भी निकाला। इसी वर्ष वे मुंबई विधान सभा के सदस्य बनाये गये थे। डॉ0 अम्बेडकर समाज में अछुतों का समानता का अधिकार दिलाना चाहते थे। अछुता का इतिहास बताने के लिए उन्होंने 'शु↘ कौन थे' नामक पुस्तक लिखी, जो बहुत लोकप्रिय हुई। डॉ0 अम्बेडकर किसी भी धर्म के विरोधी नहीं थे।

15,अगस्त 1947 को स्वतंत्र भारत की प्रथम सरकार बनी। डॉ0 अम्बेडकर को इस सरकार में कानून मंत्रो का पद दिया गया। वे अपने समय में भारत के पुराने कानूनों में कई सुधार करना चाहते थे किन्तु पं0 जवाहर लाल नेहरू से उनका मतभेद हो गया। फलत: सन् 1951 में उन्होंने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया। दुर्भाग्य से अछुतों का यह नेता अधिक दिनों तक जीवित नहीं रहा। 16,दिसम्बर सन् 1956 को अचानक लाखां पीड़ितों को छोड़कर डॉ0 अम्बेडकर स्वर्गवासी हो गये। डॉ0 अम्बेडकर इसलिए महान् हैं क्योंकि उन्होंने छुआछूत के पाप को नष्ट करने का प्रयत्न किया। उनके प्रयत्नां से अछूतों को कानून में समानता का अधिकार मिला। आज सब बच्चे एक साथ खाते-पीते और खेलते हैं

डॉ0 भीमराव अम्बेडकर

नाम-संघ्या कुमारी
वर्ग-VIII
ग्राम-काब,थाना- रानी तलाब
जिला-पटनाप

भारत देश में कई महापुरूषों ने जन्म लिये हैं। इनमें से एक डॉ0 भीमराव अम्बेडकर भी हैं। इनका जन्म 14,अप्रैल सन् 1891 ई0 को महार जाति में हुआ था। इनके पिता का नाम रामजी तथा माता का नाम भीमाबाई था। इनके पिता एक सूबेदार मेजर थे। जब भीमराव अम्बेडकर 5 वर्ष के थे तो उनकी माता का देहांत हो गया था। फिर उनकी चाची मीराबाई ने उनका पालन-पोषण किया। वे उनको प्यार से भीवा कहकर बुलाया करती थी।

उनकी प्रारंभिक शिक्षा सतारा के एक सरकारी स्कूल में शुरू हुई। जन्म से अछूत होने के कारण अम्बेडकर को कक्षा में अलग बैठना पड़ता था। वे अन्य छात्रों के साथ न तो मिल-जुल सकते थे और न ही खेल सकते थे। अछुतों को संस्कृत पढ़ने की मनाही थी। उनके साथ सभी लोग दुर्व्यवहार करते थे। सन् 1905 में रामाबाई नाम की कन्या से भीमराव की शादी हुई। शादी के बाद वे अपने पिता जी के साथ मुंबई चल गये। वहॉ वे एलफिंस्टन स्कूल में भर्ती हुए। सन् 1907 में भोमराव ने मैट✦ोक की परीक्षा पास की । महार जाति के लिए यह बहुत गौरव की बात थी। सन् 1913 में भीमराव ने बी0ए0 पास की। दुर्भाग्य से इसी वर्ष उनके पिता का स्वर्गवास हो गया। भीमराव अम्बेडकर उच्च शिक्षा पाने के लिए कोलंबिया(अमेरिका) चले गये। महार जाति के वे पहल विद्यार्थी थे, जिन्हें विदेश जाने का मौका मिला। कोलंबिया विष्वविद्यालय में उन्हें सबका प्यार और समानता का व्यवहार मिला। सन् 1916 ई0 में वे कोलंबिया से लंदन पहुॅचे। वहॉ कुछ महीने रहने के बाद वे पुनः मुंबई आ गए। विदेश में रहकर डॉ0 अम्बेडकर ने दो पुस्तकें लिखीं। मुंबई के एक कॉलेज मं उन्हें प्रोफेसर के पद पर नियुक्त कर लिया गया। सन् 1920 में उन्होंने छुआछूत की बुराई से लड़ने के लिए 'मूकनायक' नामक साप्ताहिक अखबार निकालना आरंभ किया। साधनों के अभाव में कुछ समय बाद उसे भी बन्द कना पड़ा। भीमराव पढ़ने के लिए फिर लंदन चल गये। वहॉ तीन वर्ष रहकर उन्होंने अर्थशास्त्र में डी0एस0सी0 की उपाधि प्राप्त की। सन् 1923 में वे मुंबई लौट आये और उन्होंने वकालत आरंभ कर दी। एक वर्ष बाद कुछ मित्र ों की सहायता से उन्होंने 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' की स्थापना की। अछुतों की समस्याएॅ हल करना इसका मुख्य उद्देश्य था। सन् 1927 में उन्होंने 'बहिष्कृत भारत' नामक पत्रिका भी निकाला। इसी वर्ष वे मुंबई विधान-सभा के सदस्य बनाये गये। अछुतों का इतिहास बताने के लिए उन्होंने 'शु↘ कौन थे' नामक पुस्तक लिखी, जो बहुत लोकप्रिय हुई। भारत के वायसराय ने उनकी योग्यता से प्रभावित होकर उन्हें अपने सचिव मंडल का सदस्य बनाया। सन् 1947 में भारत के स्वतंत्र होने पर वे सवंधिान सभा के सदस्य चुने गये। 15,गस्त,1947 को स्वतंत्र भारत की प्रथम सरकार बनी। डॉ0 अम्बेडकर को इस सरकार में कानून मंत्रो का पद दिया गया। सन् 1951 में उन्होंने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया। राष्ट✦ की एकता के लिए भी उन्होंने कई बातें संविधान में सम्मिलित करायीं। अछुत समाज उन्हें देवता की तरह पूजने लगा। 6,दिसम्बर,1956 को डॉ0 अम्बेडकर का स्वर्गवास हो गया। इन्हें आज भी लोग 'बाबा साहेब ' के नाम से जानते हैं।